आधुनिक हिंदी - उन्नीसवी सदी

• साहित्यिक क्षेत्र में खड़ी बोली और ब्रज भाषा में बढ़ता विवाद।
• आधुनिक काल का विकास।
• मुंशी सदासुखराय जिन्हें खड़ी बोली को आगे बढ़ाने में प्रथम दर्जा दिया जाता है। 1852 में उन्होंने आर्य से वुद्धप्रकाश नाम की पत्रिका छपना शुरू किया।
• इंग्लिश अल्लाह खान की लेख 'रानी खेती की कहानी' को पढ़ने के लिए, इसको खड़ी बोली के सदर्में में बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सफ्लेना (1989 : 23) का मानना है कि यह हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी है।
• लल्लू लाल (1763-1825) की अनेक रचनाएं - सिंहासन बबत्सी (1801) का मिर्जा काजिम अली के साथ, वेताल पद्मिसी (1801) का मजहर अली खा के साथ, राजनीती (1812) का ब्रज भाषा में अनुवाद जो हितोपदेश पर आधारित था। ध्रेमसागर का प्रकाशन 1810 में जो खड़ी बोली में अनुवाद है ब्रज भाषा से।
• सदल मिश्र (1764-1849) की दो मुख रचना - चन्द्रावती 1803 में और रामचरित 1806 में।
• राजा लक्ष्मण सिंह (1826-1896) का भी हिन्दी साहित्य में योगदान रहा। 1861 में प्रजातित नाम की पत्रिका निकाली। इसी समय में शकुंतला का अनुवाद, फिर रघुरंश (1878) और मेघदुत (1883) का अनुवाद जो कालिदास के प्रसिद्ध ग्रंथ थे।
• भारतेंदु हरिचंद्र (1850-1885) को आधुनिक हिन्दी का पिता कहा जाता है। कवि वचन सुधा नामक पत्रिका का प्रकाशन 1867 से, फिर हरिचंद्र नैनजीन (1873) नामक पत्रिका जो बाद में हरिचंद्र चक्कर के नाम से प्रकाशित हुई। भारतेंदु ने कार्य विपक्षी नाम की पत्रिका भी छपनी शुरू की। मदन गोपाल (1971) के अनुसार 'महिलाओं के लिए एक मासिक पत्रिका, महिलाओं की शिक्षा और उनकी मुक्ति के लिए एक आंदोलन के प्रवाल समर्थक थे।' बंगाली नाटक विद्यास युद्ध का अनुवाद। राजप्रर का अनुकूलन (प्रस्तावना: हिन्दी साहित्यिक भाषा में, व्याकरण पर कम परवलु चंचरण पर ध्यान) फिर वेंजस के व्याधार का अनुकूलन दुर्लभ बंधु (1880) के नाम से। अन्य कार्यों में सत्त्व हरिचंद्र, चन्द्रावती, मुन्द्रा राक्षस (1875), धर्मशाल बिजय, राजपुर मंजरी (1877) और पांडुर विद्याधर है। उनके मूल कृतियों में वैदिक हिंसा हिंसा ना भावति, 1873 का नाटक, जो मांस भक्षण और शराब के पीने (शैव और वैष्णव के भक्तों की तरफ इशारा) के बारे में एक व्यंग्य प्रहसन है। बताएँ दो स्थिति और वेतालों की अवस्था पर आधारित प्रेम नागिन (1875)। भारत में विगतेंद्र स्थिति से सम्बन्धित भारत दुर्लभ और अंधेरा नगरी जैसे नाटक अभी भी बहुत लोकप्रिय हैं। भारतेंदु ने 3000 से अधिक भक्ति गीत लिखे हैं, और सभी में सबसे लोकप्रिय "ओम नम जगदीश हरे" है।